

वचंसि योगग्रथितानि साधो न नः तमं ब्रू मनसापि भेतुम् *entwirren* Būāg. P. 5, 10, 19. तच्छेककूटमद्यापि ग्रथितं मुदं मुने । भेतुं न शक्यते ऽर्थस्य गूढत्वात् MBh. 1, 82. — 3) *unterbrechen, stören*: तयोद्वाःस्यः समयं ल-  
न्मणो ऽभिनत् Ragh. 13, 94. तेषां न भिन्ना मुदः Spr. 2326. ततस्तैर्भिद्यते  
वृत्तम् *den guten Lebenswandel unterbrechen* so v. a. *ihn verlassen* MBh. 13, 7544. fg. Vgl. भिन्नवृत्त. भूभङ्गभिन्नतिलकः so v. a. *verwischt* Mālav. 67. Daṣak. in BENF. Chr. 199, 5. — 6) *brechen* so v. a. *verrathen*: भि-  
न्द्यवमता मन्त्रम् M. 7, 130. Kām. Nitis. 11, 65. Spr. 2348. षट्पणो भि-  
द्यते मन्त्रः 3060. figg. 3871. 199. भिन्नमन्त्र R. 4, 33, 9. मन्त्रवीजमिदं यत्ना-  
द्भनणीयं तथा यदा । मनागपि न भिद्येत तद्विन्नं न प्ररोहति ॥ Spr. 2413.  
Kām. Nitis. 11, 53. न रक्ष्यते भेत्यस्यि Daṣak. in BENF. Chr. 197, 20. —  
7) *spalten, theilen* so v. a. *entzweien*: दूत एव हि संधते भिन्नत्येव च  
संकृतान् । दूतस्तत्कुरुते कर्म भिद्यते येन वा न वा ॥ M. 7, 66. ब्रलवत्प-  
र्यताञ्जकूत्रभिन्त्यादनुपलन्तिः Kām. Nitis. 17, 17, 22. Kathās. 46, 50. कथं  
च पञ्च कृत्वाप्येकस्यां ते नराधियाः । वर्तमाना मन्त्राभागा नाभिद्यत पर-  
स्परम् ॥ MBh. 1, 7598. भिन्नाः *Entzweite, Zerfallene* 1358. fg. Spr. 4331.  
fg. R. 4, 34, 7. Kām. Nitis. 17, 25. 19, 2. Kathās. 34, 210. दानभिन्न *durch  
Geschenke abtrünnig gemacht, — bestochen* Spr. 4936. pass. *sich ab-  
theilen von, sich fernhalten von* (instr.): द्वैरपनैरहितैश्च तस्य भिद्यन्व  
नित्यं कुक्कोद्वनैश्च MBh. 3, 14718. — 8) *Jmd mit sich selbst entzweien,  
irre machen, unstimmen*: मन्त्रातो ऽपि हि भिद्यते स्त्रीभिर्द्विर्वाचलाः  
Spr. 2402. एवं विप्रकृता राजन्वलिर्भगवतासुरः । भिद्यमानो ऽप्यभिन्नात्मा  
प्रत्याह Būāg. P. 8, 22, 1. Vgl. वाग्भिर्भयो हि कातरः Spr. 199. — 9)  
*ändern*; pass. *sich ändern*: न — भिन्दति मन्दा गतिम् Kumāras. 1, 11.  
यद्येना नद्यः स्पन्दमानाः समुद्रावपणाः समुद्रे प्राप्यास्तं गच्छति भिद्येते ता-  
सां नामत्रये Praṇop. 6, 5. ऋकभिन्नमुखस्वराः Jāg. 2, 267. भिन्नस्वर *eine  
veränderte, entstellte Stimme habend* Sūc. 1, 308, 14. 2, 83, 13. Spr.  
2048. Čāk. Cu. 140, 10. भिन्नकण्ठधने Sāh. D. 28. विश्वासापगनाद्भिन्न-  
गतयः (मृगाः) Čāk. 14. Vikr. 80. भिन्नवर्णाधरौष्ठ Megh. 82. ह्यापाभिन्न-  
स्फाटकाविशद 63. भिन्ना रागः किसलरूचानाव्यधूमेऽग्नेन ad Čāk. 14. —  
10) *unterscheiden, einen Unterschied machen*; pass. *verschieden sein,  
sich unterscheiden von* (abl.): इत्यन्ये भिन्दति H. 309. Sch. उपाधिर्भि-  
द्यते Kap. 1, 132. भिद्येते ब्रह्मणाननी Bālab. 24. न कारणाद्विभेदं कुमारः  
Ragh. 3, 37. Čiç. 9, 16. Mallin. zu Čiç. 12, 63. Schol. bei Wilson, Sām-  
khaṣak. S. 38. भिन्न *verschieden* AK. 3, 2, 32. Trik. 3, 1, 18, 27. 3, 250. H.  
1468. an. 2, 277. Med. n. 14. Ragh. 2, 50. Čāk. 30. Mālav. 4. Sūc. 1, 26.  
7, 10. Spr. 229. 382. Kathās. 33, 108. Rāga-Tar. 4, 428. 3, 176. Bā-  
lab. 24. Vop. 6, 2. अभिन्नकाल Čāṇk. Čr. 1, 46, 5. Gṛh. 1, 3. भिन्नज्ञाति-  
मत् Mārk. P. 113, 8. mit einem abl. P. 2, 3, 29. Sch. त्रगन्मियो भिन्न-  
भिन्नमीश्वरात् Frab. 33, 10. mit der Ergänzung componirt: धर्मभिन्नं तु  
ज्ञानमत्रोच्यते प्रमा *ein anderes Wissen als Irrthum* Būāg. 133, 8.  
आङ्भिन्ना निपातः *eine andere Partikel als आङ्* Schol. zu P. 1, 1, 14.  
2, 1, 4, 5. Nilak. 160. *verschieden* so v. a. *vom Gewöhnlichen* —, *Nor-  
malen abweichend*: भिन्नवर्त्मन् so v. a. *der den rechten Weg verlassen  
hat* Spr. 1707. भिन्नचारित्रदर्शन R. Gorr. 2, 118, 7. Vgl. नातिभिन्न. —  
11) भिन्न *vermischt* —, *verbunden mit* (instr.): = संगत H. an. 2, 277.  
Med. n. 14. = मिश्र. संवलित die Scholl. भिन्ना रुचं रवेः केतनरत्नभासा  
Kir. 16, 3. स्वेदलेशैर्भिन्नं (v. l. लेशलेशैः) गात्रम् Čāk. 37. mit der Er-

gänzung componirt: यौवनभिन्नशैशव Ragh. 3, 32. पुष्पोच्चयः पल्लवभङ्ग-  
भिन्नः Kumāras. 3, 61. Čiç. 4, 26. 20, 56. तीव्राघातादभिमुखतरुस्कन्धभि-  
न्नैकदन्तः (भिन्न v. l. für भग्न) so v. a. *hängen geblieben* (= लग्न Schol.)  
Čāk. 32. दृष्ट्वां भिन्नं (= लग्न Schol.) कुङ्कुमं कापि काण्ठे *hängend an, haf-  
tend* Kūvalaj. 174, a, 4. Vgl. भिन्नाञ्जन.

— caus. 1) *spalten, brechen, zerschlagen*: भेदयेयुः स्थिरान्दुमान् R. 1,  
16, 23. पुराद्यानानि सर्वाणि भेदयामास MBh. 3, 620. Hariv. 11903. अनयो-  
र्महान्निसर्गापज्ञातः स्नेहः कथं भेदयितुं शक्यः *zerstören, lösen* Hit. 67, 2.  
भेदेत = भिन्न AK. 3, 2, 50. — 2) *theilen*: षोडशभेदिताः *sechszehnfach  
getheilt, in 16 Arten zerfallend* Sāh. D. 18, 112. Könnte auch adj. von  
षोडश-भेद sein. — 3) *entzweien mit Andern oder mit sich, Jmd irre  
machen, auf seine Seite hinüberziehen* MBh. 1, 1358. 7399. 13, 555. 558.  
मुष्टिघ्नानपि (so die neuere Ausg.) लोकेषु भेदयन् Hariv. 3209. R. 4, 34,  
6, 7. Kathās. 34, 209. भयेन भेदयेद्भीहू शूरमञ्जलिकर्मणा । लुब्धमर्थप्रदानेन  
समं न्यूनं तथैवज्ञात ॥ Spr. 2017. 3013. घसकृच्छाप्यहं तेन वत्कृते पार्य  
भेदितः MBh. 3, 2835. R. Gorr. 2, 18, 15. 77, 2. तमपि कैशिकं रम्भे भे-  
दयस्व (= कामोत्पादनेन तपसश्चालय Schol.) तपस्विनम् so v. a. *verführe*  
R. Schil. 1, 64, 7.

— desid. विभित्सति P. 1, 2, 10. Sch. zu *durchbrechen* —, zu *sprengen  
beabsichtigen*: अनीकम् MBh. 7, 1480. 1624. — Vgl. विभित्सा fg.

— desid. vom caus. s. विभेदयिषु.

— intens. वेभिदीति P. 7, 4, 65. Sch. 6, 4, 49. Sch. वेमेति Vop. 20, 22.  
zu *wiederholten Malen spalten, — einhauen in*: भूयस्तं वेभिदां चक्रे न-  
खतुण्डायुधः खगः Bhāt. 3, 105. तस्याप्यवेभिदिष्टसौ मूर्धानं मुष्टिना-  
द्भदः 13, 116.

— अनु *der Länge nach spalten, — zerschlitzen*: तं द्वेद्यान्वभिन्तु Čat.  
Br. 1, 6, 3, 17. pass. *sich öffnen*: अन्वभिद्येतां (v. l. न्यभि<sup>०</sup>) कर्णा Būāg.  
P. 3, 26, 53. — वद्धं सेतुं को ऽनुभिन्त्यात् MBh. 2, 2483 *fehlerhaft für को  
नु भि<sup>०</sup>*.

— अय *abschlagen*: भिन्धि विश्वा अय दिपैः RV. 8, 43, 40.

— अय *zerspalten, durchbohren*: अय तमनी धृपता शन्वर्भे भिनत् RV.  
1, 34, 4. 39, 6. 7, 18, 20. 2, 11, 2. 18. अयभिन्तकुम्भः पर्वतानाम् 4, 19, 4.  
10, 8, 9. 69, 11. तीक्ष्णैर्वेवा द्वादाव् भिन्दत्येनम् AV. 5, 18, 9. चर्म TS. 7, 3.  
10, 1. दत्तिदत्तावभिन्न MBh. 6, 1774. अग्रिहोत्रम् पत्रावभिन्नं स्वात् *zer-  
sprungen* Čat. Br. 12, 4, 4, 8. — Vgl. अयभेदिन्.

— आ *zerschlitzen, zerreißen*: तन्मे वर्धम् नृसिंहराजकरैराभिद्यते  
Spr. 2307.

— उद् *durchdringen durch* (acc.): उद्भिज्ञानि भूमिमुद्भिद्य ज्ञातानि  
स्तवावृतादोनि Vedāntas. (Allab. No. 71. पूलकोद्भिन्नसर्वाङ्ग Būāg. P. 3,  
2, 5. pass. *aufspringen*: अण्डम् — नोद्भिद्यति MBh. 3, 3563. *hervorbre-  
chen, hervorschießen, zum Vorschein kommen*; act.: नस्तः चतुष्टः श्रो-  
त्रत उद्भिन्तु Čat. Br. 13, 4, 4, 6. figg. pass. dass.: यावन्नोद्भिद्यते (so zu  
lesen) स्तनौ Paṭhinasī in Dājabh. 273, 1. उद्भिद्यमानश्चमजलपुलक Daṣak.  
in BENF. Chr. 199, 5. Būāg. P. 5, 7, 11. वत्सुनोतिपादस्य पुष्पमुद्भिन्न-  
दम् Mālav. 10, 14. Kathās. 14, 27. Spr. 3790. उद्भिन्नैरामपुलकैः Kācra-  
p. 35. प्रथमयौवनोद्भिन्नकर्कशस्तनयुग Paṣkāṭ. ed. off. 49, 22. यौवनोद्भिन्न-  
देहा Paṣkāṭ. 4, 6, 7. नवमेषशब्दाद्भिन्नया रत्नशलाकयेव Kumāras. 1, 24.  
उद्भिन्नविद्युदलयो मेघः Ragh. 13, 21. उद्भिन्नरुधिर् MBh. 7, 3787. 9, 3237.